REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

भारतीय बैंको के राष्ट्रीयकरण और बैंको की मौजूदा स्थिति का अध्ययन

डॉ. छाया करकरे[१] , डॉ. सुर्यकांत पवार[२]
[१]के.आर.एम. महिला महाविद्यालय, नांदेड.
[२]लोकमान्य महाविद्यालय, लोहा.

I) पृष्ठभूमी :

भारत में वर्ष १९६९ में १४ बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया था।

बैंकिग इतिहास सभ्यताओं के विकास के साथ ही माना जा सकता है। भारत एवं विश्व में श्रेणी और निगमों के माध्यम से बैंकिग व्यवस्था का संचालन किया जाता था। अतीत में ऐसे कई उदाहरण मिलते है जिससे प्रतित होता है कि कई वर्ग एवं समुदाय इन्ही माध्यमों से व्यापार एवं अन्यजरूरतो के लिए धन प्राप्त करते थे। इतना ही नही ये संस्थान लोगों का घन जमा भी कराते थे जिस पर ब्याज देय होता था। भारत में यूरोपियों विशेषकर अंग्रेजो के आगमन के पश्चात बैंकिग क्षेत्र में कुछ तेजी देखने को मिलती है। हालॉकी ये संस्थान पूर्णत: ब्रिटिश हितों एवं ब्रिटिश कंपनियों के लिये ही सेवाएँ दे रहे थे यही स्थिति बाद में भारतीय बॉकिग संस्थानों में भी देखी जा सकती थी। स्वंतत्रता के पश्चात भी बैंको की मानसिकता एवं कार्यपध्दती में कोई बदलाव नही देखा गया। बैंको के राष्ट्रीयकरण के पूर्व भारत की ८० प्रतिशत पूँजी निजी बैंको के पास ही थी, साथ ही इन संस्थानों का भारत की सामाजिक, आर्थिक स्थिति सुधारने में कोई योगदान नही था। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य समस्याएँ भी थी।

II) शोधालेख के उद्देश्य :—

१.बैको का राष्ट्रीयकरण—कारक का अध्ययन करना।
२. बैंको का राष्ट्रीयकरण एवं विलय का अध्ययन करना।
३. राष्ट्रीयकरण के परिणाम का अध्ययन करना।
४. राष्ट्रीयकृत बैंक एवं निजी क्षेत्र के बैंको का अध्ययन करना।

भारत का बैंकिग क्षेत्र स्वतंत्रता के पश्चात प्रमुख रूप से विकास में सहयोग की इन बैंको की कोई रूची नही थी, वही दूसरी ओर इनका प्रशासन एवं विनियमन भी खराब स्थिति में था। वर्ष १९४७—१९५५ के बिच लगभग छोटे बडे ३०० से भी अधिक बैंक बंद हो चुके थे, साथ ही इन बैंको में जमा लोगों की जमा पूंजी भी डूब चुकी थी। ये बैंक भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की पहुँच से दुर थे तथा इन बैंको के माध्यम से कुछ उद्योग कालाबाजारी तथा जमाखोरी में भी लिप्त थे।

उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त तत्कालिन समय में सरकार अर्थव्यवस्था को गति देणे के लिए विभिन्न प्रयास कर रही थी, भारत में समावेश को बढावा देने के लिए तथा ग्रामीण आबादी को बैंकिग व्यवस्था से जोडने के लिए सरकार बैंकों का समर्थन चाहती थी किंतु बैंको पर सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के बगैर यह मुमकिन नहीं था। अत: सरकार द्वारा वर्ष १९६९

में १४ बैंको का और १९८० में ०६ बैंको का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

विश्व में १९५० के दशक से पूर्व बैंकिग क्षेत्र मुख्य रूप से निजी क्षेत्र द्वारा संचलित हो रहा था। द्वितीय विश्वयुध्द में शामिल देशों को गंभीर आर्थिक हानी उठानी पडी थी जिससे इन देशों की अर्थव्यवस्था को गहरा धक्का लगा था। इससे उबरने के लिए विभिन्न देशों विशेषकर युरोपीय देशो को आर्थिक सहायत्ता प्राप्त हो सके।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी गरीबी, ग्रामीण—शहरी अंतराल भी आत्याधिक था। सरकार के विभिन्न प्रयासों के बावजूद इस क्षेत्र में अधिक सुधार नही हो पा रहा था। भारत सरकार के समक्ष पूंजी की भी बडी समस्या थी क्योंकि संसाधन समिती थे। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्ष १९६९ में सरकारने १४ बैंको (जिनकी पुंजी ५० करोड रूपए से अधिक थी) का राष्ट्रीयकरण किया। बाद में १९८० में भी ६ बैंको का राष्ट्रीयकरण के साथ—साथ इन्ही उदेश्यों के चलते कुछ बैंको का विलय की शिफारस पहले ही नरसिंहम समिती तथा पी.जे. नायक समिती द्वारा की जाती रही है। भारतीय बैंकिग संघ के अनुसार, वर्ष १९८६ से अबतक लगभग ५० बैंको का विलय किया गया है। न्यू बैंक ऑफ इंडिया का पंजाब नेशनल बैंक समय पश्चात वर्ष २०१७ में भारतीय महिला बैंक एवं पॉच अन्य बैंको का स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में विलय किया गया था। इस विलय के पश्चात एस.बी. आय. विश्व के ५० बैंको की सूची में शामिल हो गया है। इसके अतिरिक्त वर्ष २०१९ में विजया बैंक एवं देना बैंक का बैंक ऑफ बडोदा में विलय किया गया।

राष्ट्रीयकरण के पश्चात बैंको की खराब स्थिति में तेजी से सुधार हुआ। वर्ष १९६९ से पूर्व बैंको की सिर्फ लगभग ८ हजार शाखाएँ थी जो वर्ष १९९४ में बढकर ६० हजार तथा वर्ष २०१४ में इनकी संख्या १ लाख १५ हजार के करीब पहुँच गई। इससे पहले सभी बैंक सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ही स्थित थे। लेकिन राष्ट्रीयकरण के बाद वर्ष २०१४ तक ग्रामीण क्षेत्र में लगभग ४३ हजार बैंक स्थापित हो चुके थे। पहले बैंक निजी स्वामित्व के अंतर्गत आते थे जिससे इनकी रूचि सामाजिक कल्याण के बजाय निजी लाभ में होती थी। लेकिन भारत जैसे देश में बैंकिग व्यवस्था विभिन्न सामाजिक आर्थिक क्षेत्रों के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीयकरण के पश्चात बैंक भारत में समावेशि विकास एवं विभिन्न कल्याण योजनाएँ की धुरी बन गए । वर्तमान में जन—धन—योजना जैसे कार्यक्रम जिसके अंतर्गत वर्ष २०१८ तक लगभग ३१ करोड बैंक खाते खोले गए, बैंको के राष्ट्रीयकरण के पश्चात ही संभव हो सकता था। ऐसी योजनाओं ने न सिर्फ समाज के अंतिम वर्ग तक बैंको की पहुँच सुनिश्चित की बल्कि विभिन्न योजनाओं के लिए आधार का कार्य भी किया। भारत में बजट का बडा हिस्सा सब्सिडी के रूप में खर्च किया जाता है। विभिन्न चैनलों के माध्यम से दी जाने वाली सब्सिडी भष्टाचार एवं विसाव की समस्या होती थी, इससे एक बडी राशी लक्षित समुह तक नही पहुँच पाती थी। बैंको के समावेशीकरण के बाद ऐसी सब्सिडी प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से देना संभव हो सका। वर्तमान में गैस सब्सिडी, मनरेगा, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, सबके लिए आवास योजना आदि कार्यक्रमों की राशी सीधे लाभार्थी की खाते में देना मुमकिन हो सका है।

उदारीकरण के पश्चात निजी क्षेत्र को भी बैंकिग क्षेत्र में प्रवेश की अनुमती दे दी गई। वर्ष १९९४ में इस तरह का पहला बैंक आई.सी.आई.सी. बैंक था जिसे उदारिकरण के पश्चात बैंक के लिए लाइसेंस दिया गया था। वर्तमान में निजी क्षेत्र को बैंकिग में शामिल करने से इस क्षेत्र में तेजी आई तथा लोगों के लिए बैंकिग सेवाएँ सर्वसुलभ हो गई। इन बैंको ने नए—नए उत्पादों को बाजार में उतारा एवं धीरे—धीरे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको से प्रतिस्पर्धा करने लगे। ये बैंक पूर्ण: बैंकिंग मूल्यों पर आधारित है एवं सिर्फ अपने ग्राहकों के प्रति ही जिम्मेदार है। जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अर्थात राष्ट्रीयकृत बैकों को अपनी उत्तरजीविता के साथ—साथ जनता के प्रति सामाजिक—आर्थिक दायीत्व का भी निर्वहन करना पड रहा है। इससे पी.एस.बी. के लिए निजी बैंको से प्रतिस्पर्धी करना मुश्किल हो रहा है। विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंक गैर—निस्पादीत संपत्ति एन.पी.ए. की अधिकता तथा खराब कार्यकारन के कारण मुश्किलों का सामना कर रहे है। इसके अतिरिक्त एक अन्य समस्या इन बैंको पर नियंत्रण को लेकर भी है, सरकार तथा आर.बि. आय, दोनों के द्वारा बैंको को दिशा निर्देश दिए जाते है। इससे असमंजस की स्थिति पैदा हो रही है।

उपुर्युक्त स्थिति के बावजुत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अभी भी मजबुत स्थिति में बजे हुए है। बाजार की कुल बैंक उद्यारी एवं कुल जमा अभी भी क्रमश: ६३.२ प्रतिशत एवं ६६.९ प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको में ही मौजूद है। हालांकी एन.पी.ए. बैंको के लिए बडी समस्या बनकर उभरा है। किंतु इसमें भी सुधार देखा जा रहा है साथ ही सरकार आर.बी.आय. एवं संबंधित बैंक अपने फॅसे हुए ऋण की वसूली के लिए प्रयास कर रहे हैं।

कुछ विशेषज्ञ बैंकों की कमजोर हो रही स्थिति को देखते हुए इनके निजीकरणका विचार प्रस्तुत करते रहे है। भारत जैसे देश में जहॉ गंभीर आर्थिक असमानताएँ मौजूद है।

निष्कर्ष :

बैंको के राष्ट्रीयकरण को ५० वर्ष हो चुके है। इस अवधि में भारत ने कई क्षेत्रों में अपनी स्थिति को सुधारा है। इसके लिए अन्य बातों के अतिरिक्त बैंको की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उदारीकरण के पूर्व भारत में पूॅजी की कमी थी जिसे कुछ हद तक बैंको ने दूर किया, साथ ही बैंक सरकार और जनता के बीच के आर्थिक अंतरण के सबसे बढे माध्यम बनकर उभरे है। इसके अलावा इन बैंको के कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पडा है। ये चुनौतियॉ न सिर्फ प्रतिस्पर्धा के स्तर पर बल्कि बैंको के ढॉचे से भी उत्पन्न हुई है।

संदर्भ :

१. https/m.wikipedia. 'भारतीय अर्थव्यवस्था के उतार चढाव' BBC Hindi.com
२. 'भारत में बैंको का बदलता स्वरूप' दृष्टि द व्हिजन ऑक्टों. २०१८.
३. मधुमास चंद्र, 'बैंक राष्ट्रीयकरण से बदली थी तस्वीर डब्लूईबी. दुनिया.'
४. प्रतिमा पटेल, 'राष्ट्रीयक्रत बैंक : भारत के सरकारी बैंको की स्थिति, गुडरिटर्न्स हिंदी क्लासरूम जुन २०१८.
५. शंकर सहाय सक्सेना 'बैंकिग' रामजारायण लाल प्रयाग.
६. आर. के. मूलचंदानी २०१७ बैंकिग व्यवसाय एवं पूंजी प्रर्याप्तता, आधार प्रकाशन दिल्ली.